अध्याय.2
संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन

2.1.0 प्रस्तावना

शोध का एक महत्वपूर्ण भाग संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन है। यह अनुसंधानकार्य के लिए आवश्यक सैद्धान्तिक पृष्ठभूमि प्रदान करता है। अनुसन्धानकर्ता को जब तक यह नहीं स्पष्ट हो जाता है कि इस समस्या क्षेत्र में कितना कार्य हो चुका है, किस विधि से कार्य किया गया है तथा निष्कर्ष क्या आये है तब तक वह न तो समस्या का निर्धारण कर सकता है और न उसकी रूपरेखा तैयार कर कार्य को सम्पन्न कर सकता है। व्यक्ति को अनुसंधानिक ज्ञान द्वारा अपने अध्ययन की योजना बनाना सुविधाजनक हो जाता है। संबंधित साहित्य का सर्वेक्षण, अनुसंधान के लिए अपनायी जाने वाली विधि, प्रयोग में लाये जाने उपयुक्त विधियों को स्पष्ट करता है। यह इस तथ्य का भी आभास देता है कि लिया गया अनुसंधान कार्य किस सीमा तक सफल हो सकेगा और प्राप्त निष्कर्षो की उपयोगिता क्या होगी? इसका यह महत्वपूर्ण कार्य समस्या के परिभाषीकरण, अवधारणा बनाने, समस्या के सीमांकन और परिकल्पना के निर्माण में सहायता करना है। संबंधित साहित्य अनुसंधान की समस्या से संबंधित उन सभी प्रकार की पुस्तको, ज्ञान–कोषो, पत्र–पत्रिकाओं, प्रकाशित तथा अप्रकाशित शोध प्रबन्धों एवं अभिलेखों आदि से है, जिनके अध्ययन से अनुसंधानकर्ता को अपनी समस्या के चयन, परिकल्पनाओं के निर्माण, अध्ययन की रूपरेखा तैयार करने एवं कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है।

अनुसंधानकर्ता ने इस शोध कार्य में अनेक संबंधित अनुसंधान साहित्य पर और शोधकार्य के अंतर्गत चरो पर विचार किया है।

2.2.0 संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन

मिश्रा (2009), महाविद्यालय के विद्यार्थियों के समायोजन का स्तर एवं संवेगात्मक परिवक्तवता। उद्देश्यः स्नात्तकोत्तर कक्षा के विद्यार्थियों का समायोजन का स्तर एवं परिपक्वता के मध्य सहसंबंध को देखना। प्रविधिः कानपुर शहर के 160 स्नात्तकोत्तर स्तर के विद्यार्थियों को कई महाविद्यालयों से उद्देश्यपूर्ण पद्धत्ति से चुना गया जो निम्न–मध्यम वर्ग परिवार से संबंधित थे और उनकी आयु 18 से 22 वर्ष की थी। उपकरणः संवेगात्मक बुद्धिमत्ता मापनी यशवीर सिंग एवं भार्गव द्वारा विकसित की गई एवं समायोजन मापनी को अस्थाना द्वारा विकसित किया गया। परिणामः यह पाया गया कि संवेगात्मक परिपक्वता मापनी के द्वारा लड़कियों का मध्यमान स्कोर लड़को की तुलना में सार्थक है। विद्यार्थियों के समायोजन मापनी के स्कोर में सार्थक संबंध पाया गया।

2.2.1 शैक्षिक उपलब्धि से संबंधित पुनरावलोकन

एल्म (2001), सामाजिक, आर्थिक स्थिति, चिंता का स्तर और अभिप्रेरणा उपलब्धि का शैक्षिक उपलब्धि से संबंध। उद्देश्यः1. विद्यालय जाने वाले विद्यार्थियों के सामाजिक आर्थिक स्तर का शैक्षिक उपलब्धि से संबंध का अध्ययन2. विद्यालय में जानेवाले विद्यार्थियों की उपलब्धि, अभिप्रेरणा का शैक्षिक उपलब्धि से संबंध का अध्ययन। परिकल्पनाः विद्यालय जानेवाले विद्यार्थियों के सामाजिक–आर्थिक स्तर के शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक संबंध नहीं है। निष्कर्षः विद्यार्थियों के सामाजिक–आर्थिक स्तर एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सकारात्मक

संबंध है। अभिप्रेरणा उपलब्धि एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य नकारात्मक संबंध पाया गया।

सुरेश (2003), विद्यालय में जानेवाले अंतर्मुखी–बहिर्मुखी विद्यार्थियों के सामाजिक आर्थिक स्तर का शैक्षिक उपलब्धि से संबंध का अध्ययन करना। उद्देश्यः 1. बहिर्मुखी किशोरो का समायोजन एवं शैक्षिक उपलब्धि के संबंधों का अध्ययन करना। 2. अंतर्मुखी–बहिर्मुखी के मध्य किशोरों का समायोजन एवं उसके वातावरण के प्रभाव को ज्ञात करना। पद्धतिः व्यक्तिगत ऑकड़ो की शीट को ऑकड़ो के एकत्रीकरण के लिए अपनाया गया। निष्कर्षः जो उच्च आय परिवार से थे उन किशोरों की शैक्षिक उपलब्धि सकरात्मक थी।

सैनी (2005), कामकाजी व गैर–कामकाजी माताओं के किशोर बालकों के घर का वातावरण एवं शैक्षिक उपलब्धि। उद्देश्यः कामकाजी व गैर–कामकाजी माताओं के किशोर बालको के शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन एवं तुलना करना। पद्धतिः यह अध्ययन 415 किशोर न्यादर्श पर किया गया। इन्हें शासकीय एवं अशासकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों से लिया गया। स्तर यादृच्छिक पद्धति का प्रयोग न्यादर्श के चयन के लिए किया गया। निष्कर्षः गैर–कामकाजी माताओं के किशोर बालकों की शैक्षिक उपलब्धि से कई ज्यादा बेहतर कामकाजी महिलाओं के बालको की शैक्षिक उपलब्धि पाई गई।

चौधरी (2007), माध्यमिक शाला के विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि व आकांक्षा के स्तर पर सहसंबंधात्मक अध्ययन। उद्देश्यः शैक्षिक उपलब्धि एवं आकांक्षा के स्तर में सहसंबंध का ज्ञात किया गया। उपकरणः उत्तराचंल के गरवाल क्षेत्र के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के भिन्न शाला के नवीं कक्षा के 500 विद्यार्थियों को न्यादर्श के लिए चुना गया। इस अध्ययन में आकांक्षा स्तर मानक का प्रयोग किया गया

जोक शाह एवं भार्गव द्वारा बनाया गया। शैक्षिक उपलब्धि के लिए विद्यार्थियों के वार्षिक परीक्षा के अंको को लिया गया। सांख्यिकीय तकनीकीः सांख्यिकीय मूल्याकंन के लिए सहसंबंध गुणांक के प्रकार में पीयर्सन प्रोडेक्ट मोमेंट का प्रयोग किया गया। परिणामः छात्र–छात्राओं की शैक्षिक–उपलब्धि व आकांक्षा के स्तर के मध्य कोई सार्थक संबंध नहीं है।

लाथा (2007), विद्यालयीन विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं आत्म–सम्मान के मध्य संबंध। उद्देश्यः विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं आत्म–सम्मान के मध्य अंतर को ज्ञात करना। परिकल्पनाः विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं आत्म–सम्मान के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं है। न्यादर्शः इस अध्ययन में 13–15 वर्ष के 400 विद्यार्थियों को अध्ययन के लिया चुना गया। इसके अंतर्गत 257 लड़के और 143 लड़कियों को लिया गया जो नवी कक्षा के थे और इनका आर्थिक समूह मध्यम आय का था। उपकरणः प्रस्तुत अध्ययन में आत्म–सम्मान प्रश्नावली बनाई गई जो करूणानिधि (1996) द्वारा निर्मित की गई। वार्षिक परीक्षा के अंकों को शैक्षिक उपलब्धि के मापन के लिए लिया गया। परिणामः विद्यार्थियों के आत्म–सम्मान और शैक्षिक उपलब्धि के मध्य कोई संबंध नहीं पाया गया है।

गौतम एवं स्वाति (2008), उच्च शाला के विद्यार्थियों के आकांक्षा का स्तर एवं उत्कण्ठा परीक्षण के संबंध में शैक्षिक उपलब्धि। उद्देश्यः उच्च शाला के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं आकांक्षा का स्तर इनके मध्य अंर्तप्रभाव का अध्ययन किया गया। उपकरणः प्रस्तुत अध्ययन में शिमला शहर के नवीं कक्षा के 220 विद्यार्थियों को यादृच्छिक पद्धति से चयनित किया गया। परिणामः उत्कण्ठा का शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव पाया गया एवं आकांक्षा के स्तर का

शैक्षिक उपलब्धि पर नकारात्मक प्रभाव पाया गया। ऑकड़ो के आधार पर उत्कण्ठा एवं आकांक्षा का स्तर उच्च पाया गया।

देका और चौधरी (2008), छात्र एवं छात्राओं के शैक्षिक–उपलब्धि पर तुलनात्मक अध्ययन एवं अनिवार्य विषयों का सांख्यिकीय वितरण में निर्धारण। उद्देश्यः इस अध्ययन में उच्च शाला के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक योग्यता की तुलना की गई। न्यादर्शः कामरूप तहसील से 4940 विद्यार्थियों को यादृच्छिक पद्धति से चुना गया। चुने गये न्यादर्श में 2190 छात्र एवं 2750 छात्राएं थी। निष्कर्षः इस अध्ययन में उच्च शाला के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक योग्यता के मध्य सार्थक अंतर पाया गया है। सांख्यिकीय विश्लेषण के दौरान यह पाया गया कि छात्रों के सफलता का प्रतिशत छात्राओं से अधिक था। छात्रों का मध्यमान छात्राओं के मध्यमान से अधिक था।

पांडे (2008), पालकों की पृष्ठभूमि बालकों की अभिप्रेरणा उपलब्धि एवं शैक्षिक उपलब्धि के साथ संबंध। उद्देश्यः पालकों की पृष्ठभूमि का बालकों की अभिप्रेरणा उपलब्धि एवं शैक्षिक उपलब्धि के साथ संबंधों को ज्ञात करना। उपकरणः मिजो जाति के उच्च माध्यमिक विद्यालय के 92 छात्र–छात्राओं पर अध्ययन किया गया। अभिप्रेरणा उपलब्धि मापनी बीना शाह द्वारा निर्मित कीगई। शैक्षिक उपलब्धि छात्राओं के छःमाही परीक्षाओं के अंकों पर आधारित थी जो विद्यालयीन कार्यालय से प्राप्त की गई। निष्कर्षः जो कामकाजी पालक है उनके बच्चों पर शैक्षिक उपलब्धि और अभिप्रेरणा उपलब्धि के मध्य सार्थक प्रभाव पड़ता है। जो गैर–कामकाजी पालक है उनके बालकों की अभिप्रेरणा उपलब्धि और शैक्षिक उपलब्धि के मध्य कोई सार्थक प्रभाव नहीं है।

2.2.2 विषयवार शैक्षिक उपलब्धि से संबंधित अध्ययन

पाधी (1994), विज्ञान के विद्यार्थियों का आत्म–संप्रत्यय और उपलब्धि पर पारिवारिक वातावरण का प्रभाव। उद्देश्यः 1.विज्ञान में आत्म–संप्रत्तय और उपलब्धि के साथ पारिवारिक वातावरण के भिन्न आयामों के संबंधों को ज्ञात करना। 2.जिन विद्यार्थियों की उपलब्धि उच्च एवं निम्न है उन विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण के भिन्न आयामों के संबंधों को ज्ञात करना। परिकल्पनाः विज्ञान में आत्म–संप्रत्यय और उपलब्धि के साथ पारिवारिक वातावरण के भिन्न आयामों के मध्य कोई सार्थक संबंध नहीं है। निष्कर्षः नियंत्रण एवं सुरक्षा आयामों का पारिवारिक वातावरण पर सकारात्मक और सार्थक संबंध पाया गया। शैक्षिक आत्म–संप्रत्यय और शैक्षिक उपलब्धि में भी सार्थक संबंध पाया गया।

रंगप्पा (1994), गणित विषय पर आत्म–संप्रत्यय और उपलब्धि के प्रभाव का अध्ययन। उद्देश्यः गणित विषय पर आत्म–संप्रत्तय और उपलब्धि के संभावित प्रभावों का अध्ययन किया गया। परिकल्पनाः गणित विषय पर आत्म–संप्रत्यय और उपलब्धि के संभावित प्रभावों के मध्य सार्थक अंतर नहीं है। आत्म–संप्रत्तय समूह के है ऐसे विद्यार्थियों के गणित विषय की उपलब्धि में सार्थक अंतर पाया गया।

होग व अन्य (1995), छठवी और सातवी वर्ग के विद्यार्थियों के आत्म–संप्रत्यय और शैक्षिक उपलब्धि पर अध्ययन। उद्देश्यः आत्म–संप्रत्यय औ शैक्षिक उपलब्धि के मध्य संबंधों का मूल्याकंन किया गया। परिकल्पनाः आत्म–संप्रत्यय और शैक्षिक उपलब्धि के मध्य

सार्थक संबंध नहीं है। निष्कर्षः आत्म–संप्रत्यय और शैक्षिक उपलब्धि के मध्य संबंधों में सार्थकता पाई गई।

रामहरिया (2003), नवोदय और केन्द्रीय विद्यालय के विद्यार्थियों के गणित विषय में आत्म–संप्रत्यय, शैक्षिक उत्कण्ठा और उपलब्धि विश्लेषण का अध्ययन। उद्देश्यः नवोदय और केन्द्रीय विद्यालय के विद्यार्थियों के गणित विषय में आत्म–संप्रत्यय एवं उपलब्धि के मध्य संबंधों का अध्ययन किया गया। न्यादर्शः कक्षा सातवीं में पढ़नेवाले नवोदय एवं केन्द्रीय विद्यालय के क्रमशः 164–130 विद्यार्थियों को लिया गया। उपकरणः हरमोहन और श्रीमती सरस्वती (1977) द्वारा निर्मित आत्म–संप्रत्यय मापनी का प्रयोग किया गया। निष्कर्ष : नवोदय और केन्द्रीय विद्यालय के विद्यार्थियों के गणित विषय में उपलब्धि एवं आत्म–संप्रत्यय के मध्य सकारात्मक संबंध पाया गया।

ड्रॉगो (2004), अपारंपारिक महाविद्यालय के विद्यार्थियों में संवेगात्मक बुद्धिमत्ता एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य संबंध। उद्देश्यः अपारंपारिक महाविद्यालय के विद्यार्थियों में संवेगात्मक बुद्धिमत्ता एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य संबंधों का अध्ययन। प्रविधिः इस अध्ययन में संवेगात्मक बुद्धिमत्ता, शैक्षिक अभिप्रेरणा, ज्ञानात्मक योग्यता आदि कई चर लिये गये है। पद्धतिः ऑकड़ो के एकत्रीकरण के लिए मेयर–साल्वे द्वारा निर्मित संवेगात्मक बुद्धिमत्ता मापनी परीक्षण का प्रयोग किया गया। सांख्यिकीय विश्लेषण के लिए त्मदतमेपवद दंसलेपे का प्रयोग किया गया। निष्कर्षः अपारंपारिक महाविद्यालय के विद्यार्थियों के संवेगात्मक बुद्धिमत्ता एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य संबंध पाया गया क्योंकि विद्यार्थियों की ज्ञानात्मक योग्यता भिन्न होती है एवं शैक्षिक उपलब्धि में संवेगात्मक बुद्धिमत्ता की भूमिका सुदृढ़ पाई गई।

पाटिल व कुमार (2006), छात्र–शिक्षकों में लिंग के आधार पर संवेगात्मक बुद्धिमत्ता एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य संबंध। उद्देश्यः छात्र–शिक्षकों में लिंग के आधार पर संवेगात्मक बुद्धिमत्ता एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य संबंधों को ज्ञात करना। परिकल्पनाः छात्र–शिक्षकों के संवेगात्मक बुद्धिमत्ता एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य कोई सार्थक संबंध नहीं है। निष्कर्षः छात्र–शिक्षकों में लिंग के आधार पर संवेगात्मक बुद्धिमत्ता एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक संबंध पाया गया।

माथुर, मल्होत्रा एवं दुबे (2006), विद्यालय में जानवाले किशोर–किशोरियों के संवेगात्मक बुद्धिमत्तस और शैक्षिक उपलब्धि के मध्य संबंध। उद्देश्यः विद्यालय में जानेवाले किशोर–किशोरियों की जिम्मेदारी और शैक्षिक उपलब्धि को मूल्याकिंत करना। परिकल्पनाः विद्यालय में जानेवाले किशोर–किशोरियों की जिम्मेदारी और शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक अंतर नहीं है। निष्कर्षः उच्च शाला के विद्यार्थियों के अध्ययन से यह प्रदर्शित हुआ है कि किशोर–किशोरियों के शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर पाया गया एवं छात्राओं का अंक प्रतिशत छात्रों से उच्च पाया गया।

दुबे (2007), स्नातकीय स्तर के विद्यार्थियों के संवेगात्मक बुद्धिमत्ता और शैक्षिक उपलब्धि के मध्य संबंध। उद्देश्यः विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं संवेगात्मक बुद्धिमत्ता के मध्य संबंध को ज्ञात किया गया। परिकल्पनाः विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं संवेगात्मक बुद्धिमत्ता के मध्य संबंध को ज्ञात किया गया। प्रविधिः इस अध्ययन हेतु इविंग क्रिश्चियन महाविद्यालय के 180 विद्यार्थियों का चयन किया गया जो बी.ए. तृतीय एवं बी.एस.सी. तृतीय वर्ष के थे। संवेगात्मक बुद्धिमत्ता परीक्षण के.एस.मिश्रा द्वारा निर्मित मापनी का प्रयोग किया

गया। सहसंबंध ऑकड़ो के विश्लेषण के लिए प्रोडेक्ट मोमेंट सांख्यिकीय तकनीक का प्रयोग किया गया।

2.3.0 संदर्भित ग्रंथों पर शोधकर्ता का अवलोकनात्मक दृष्टिकोण

इस अध्याय में शोधकर्ता द्वारा प्राप्त संदर्भित शोध अध्ययन का विस्तृत एवं वर्णनात्मक वर्गीकरण चरों के आधार पर किया गया। विभिन्न शोधों के अध्ययन के अनुसार यह पाया गया कि इस विषय पर अध्ययन तो कई हुये परंतु शैक्षिक उपलब्धि एवं समायोजन चरों पर शोध अध्ययन शोधकर्ता के अवलोकनार्थ नहीं पाया गया। शोधकर्ता का विचार है कि आगे आने वाले समय में इस विषय की मांग अधिक बढ़ेगी क्योंकि यह विषय व्यक्ति के समायोजन से जुड़ा है इसलिए प्रस्तुत विषय का चुनाव किया गया